

**पड़रू** पुं. (देश.) दे. पँड़वा।

**पड़ला** पुं. (देश.) दरवाजा, इयोदी, प्रवेश-द्वार।

**पड़वा** स्त्री. (तद्.) 1. प्रत्येक पक्ष अर्थात् शुक्ल पक्ष या कृष्ण पक्ष की प्रथम तिथि 2. घाट पर रहने वाली वह नाव जो यात्रियों को पार-लाती व ले जाती है 3. पुं. भैंस का नर बच्चा।

**पड़वाना** स.क्रि. (देश.) 1. गिरवाना, खाली प्लाट पर तीन ट्रक मिट्टी पड़वाई 2. पड़ने का कार्य दूसरे से करवाना यथा- छत पर पत्थर मजदूरों से पड़वाए।

**पड़वी** स्त्री. (देश.) 1. वैशाख या जेठ माह में बोई जाने वाली एक प्रकार की ईख।

**पड़ा** पुं. (देश.) 1. रखे होने का द्योतक यथा- सारा सामान यहीं पड़ा है 2. पड़वा, भैंस का बच्चा।

**पड़ाना** स.क्रि. (देश.) 1. गिराना, झुकाना 2. पड़ने का कार्य दूसरे से कराना।

**पड़ापड़** क्रि.वि. (अनु.) दे. पटापट।

**पड़ाव** पुं. (देश.) 1. किसी सेनानी अथवा यात्री के बीच मार्ग में पड़ने वाला वह स्थान, जहाँ वह रात्रि बिताने के लिए ठहरता है यथा- पर्वतारोहियों ने आज यहीं पड़ाव डाल दिया है 2. वह स्थान जो यात्रियों के ठहरने के लिए पूर्व निर्दिष्ट हो या सुनिश्चित हो मुहा. पड़ाव मारना- पड़ाव पर रुके हुए यात्री या यात्री दल को लूटना; कारवाँ या काफिला लूटना, साहस का कोई बड़ा काम करना, शौर्य प्रकट करना 3. जहाज से बोझ उतारने चढ़ाने वाली चपटे तले की खुली और बड़ी नाव।

**पड़िया** पुं. (देश.) भैंस का मादा बच्चा।

**पड़ियाना** स.क्रि. (देश.) भैंस से भैंसे का संयोग कराना, मैथुन हेतु भैंसे को भैंस के निकट ले जाना।

**पड़ोस** पुं. (देश.) 1. किसी के घर के आसपास घर होना, प्रतिवेश मुहा. पड़ोस करना- पास या निकट के घर में रहना, बसना 2. किसी स्थान के आसपास का स्थान, समीपवर्ती या निकटवर्ती स्थान।

**पड़ोसिन** स्त्री. (देश.) पड़ोस या आस-पास रहने वाली स्त्री।

**पड़ोसी** पुं. (देश.) वह मनुष्य जिसका घर पड़ोस में हो, पड़ोस में रहने वाला, प्रतिवासी, हमसाया।

**पढ़ंत** वि. (तत्.) जिसमें किसी अन्य कवि द्वारा रचित तथा कंठस्थ होने वाली काव्य रचना का पाठ हो स्त्री. किसी कवि की कंठस्थ कविता को सुनाने की क्रिया।

**पढ़ंत** पुं. (तद्.) 1. पढ़ने की क्रिया या भाव 2. मंत्र, जादू 3. लगातार पढ़ते रहने की क्रिया या भाव, बारबार पढ़ना।

**पढ़त** स्त्री. (तद्.) 1. पढ़ने की क्रिया या भाव 2. पाठ।

**पढ़ता** वि. (तद्.) पढ़ने वाला, पाठ करने वाला।

**पढ़ना** स.क्रि. (तद्.) 1. लिखे हुए अक्षरों का अभिप्राय समझना, क्रम से उनका उच्चारण करना, पुस्तक या अक्षर समूह को पढ़कर उनके भावार्थ तक पहुँचना यथा- तीसरी बार पढ़ने पर बात समझ में आई 2. बोल-बोलकर उच्चारण करना 3. जादू करना यथा- उसने मंत्र पढ़े और मुग्ध कर दिया 4. नया स्वरूप सीखना यथा- आज का पाठ पढ़ना है 5. याद करने हेतु किसी विषय को बारबार रटना, उच्चारण करना।

**पढ़नी उड़ी** स्त्री. (देश.) 1. कसरत करते हुए एक प्रकार का अभ्यास जिसमें उछलकर या उड़कर किसी ऊँचे टीले या स्थान को लाँचा जाता है।

**पढ़वाना** स.क्रि. (देश.) 1. किसी से पढ़ने की क्रिया कराना, बँचवाना 2. किसी को पढ़ने में प्रवृत्त करना 3. किसी के द्वारा शिक्षा दिलवाना यथा- उसने अपना पत्र डाकिए से पढ़वाया; इसे बार-बार, कह-कह कर पढ़वाया है; श्याम ने अपने बच्चों को विशेषज्ञों से पढ़वाया है।

**पढ़ाई** स्त्री. (देश.) 1. पढ़ने का काम, अध्ययन का अभ्यास, पठन 2. पढ़ने का भाव या क्रिया यथा- आजकल पढ़ाई कैसी चल रही है 3. पढ़ाने के बदले में दिया जाने वाला मानदेय, पारिश्रमिक 4. पढ़ाने का कार्य, अध्यापन, पाठन 5.